last, sending photographs. But road conditions are the same. Crores are going into the repairs, but where is it actually going ? You should plug these loopholes and use it for education.

Mr. Ramgopal Reddy suggested that each one should teach one. It is an excellent idea; it did not occur to me. Even in this House, if we take the pledge to teach one, it will mean a lot. I take the pledge and I am going to start tonight. If each one starts teaching one, we will certainly achieve our objectives.

I do not want to make any comments about Bangladesh because it is going to be discussed on Monday. Whatever be the needs of Bangladesh on humanitarian grounds, India and our people are priority number one. I only hope that Government will not lose this sense of priority when we think of Bangladesh.

With these words, I request the House to adopt the motion for consideration of the Bill. I know the requisite majority for adopting it is not present.

SHRI H.R. GOKHALE : In view of the very pragmatic approach that the hon. Member has shown in his speech, may I request him to withdraw his Bill?

SHRI R.S. PANDEY : Government will bear in mind the suggestions he has made while formulating their policy.

DR. KARNI SINGH : I do not object to it. If that is the desire of the hon. House, I would be glad to withdraw my Bill. I would like the hon. Minister to kindly bear in mind what I said and set a time limit.

MR. CHAIRMAN : I will have to dispose of the amendment first. I will put it to the vote. The question is :

"That the Bill further to amend the Constitution of India, be referred to a Select Committee consisting of 8 members, namely: Shri Chhutten Lal, Shri Hiralal Doda, Shri Nathu Ram Mirdha, Shri Kishan Modi, Shri Siddhartha Shankar Ray, Shri Nawal Kishore Sharma, Dr. H. P. Sharma, and Shri S. N. Singh, with instructions to report by the first day of the next session."

The motion was negatived.

DR. KARNI SINGH : I beg to move for leave to withdraw the Constitution (Amendment) Bill, 1971.

MR. CHAIRMAN : The question is :

"That leave be granted to withdraw the Constitution (Amendment) Bill, 1971."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN : Bill is withdrawn by leave.

The Bill was by leave, withdrawn.

16.42 hrs.

PREVENTION OF CONVERSION BILL

by Shri Jagannathrao Joshi

श्री जगन्नाथराव जोशी (शाजापुर) : मैं प्रस्ताव करता हूं कि अवयस्क व्यक्तियों के धर्म संपरिवर्तन का निर्बन्धन करने वाले विधेयक पर विचार किया जाये। सभापति महोदय, इस विधेयक को प्रस्तुत करते समय प्रारम्भ में इस विषय पर उड़ीसा और मध्यप्रदेश की संयुक्त विधायक दलों की सरकारों ने जो विधेयक पास किये, इसके लिए मैं पहले बधाई देता हूं। वास्तव में यह जिम्मेदारी अपनी सरकार की है।

[SHRI K. N. TIWARI *in the Chair*]

आजादी से पहले क्या हुआ, इसके बारे में भले ही हमारा दायित्व कुछ न हो, किन्तु आजादी के उपरान्त जब हम कहते हैं कि स्वाधीनता आई, स्वराज्य आया, स्वतंत्रता आई, उसका "स्व" जो है, उस "स्व" का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ है, इस क, मुझे बड़ा खेद होता है। यह यहां जो, कल भी मैंने उल्लेख किया था, धर्म चक्र प्रवर्तनीय का शासन है, मैं जरा मंत्री महोदय से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इसका अर्थ वे समझने की कोशिश करें। (**व्यवधान**) शासन का जो दायित्व है वह

[श्री जगन्नाथराव जोशी]

धर्म चक्र प्रवर्तन करने का है। इसलिए मैं शुरू वहीं से करता हूं। भारत का धर्म अंग्रेजों के 'रिलीजन' का कन्टरपार्ट नहीं है। अंग्रेजी के "रिलीजन" का यदि सही माइनों में हम भाषान्तर करें या अनुवाद करें तो यह पंथ सा होगा। हमारे धर्म में व्यक्ति की समग्र कल्पना छिपी हुई है। व्यक्ति का मतलब "मैन इज नाट मियरली ए बन्डल आफ डिजायर्स"। उसकी वासनाएं है तृप्त होते ही आदमी सुखी हो जाएगा, यह बात नहीं है। शरीर में मन, बुद्धि और आत्मा भी है। कोई इस देश के अन्दर सन्यासी भी पैदा होता है। गंगा के किनारे वट वृक्ष के नीचे उसके मन में यह भावना भी पैदा हो सकती है कि "मैं कहां से आया हूं"। कसवं कोऽहं कुतः आयातः वह चाहना है कि इसका उसको जवाब मिले। इसलिये यह केन्द्र का दायित्व होता है, शासन का दायित्व होता है कि वह धर्म चक्र प्रवर्तन करे। केवल शरीर की चिन्ता न करें।

मन, बुद्धि, आत्मा सब है। मुझे लगता है कि अंग्रेजों ने तो ट्रान्सफर आफ पावर किया, लेकिन इस शासन ने ट्रान्सफर आफ रेसीपोंसिबिलिटी कर दिया। यह जो व्यक्ति के लिए आवश्यक है, मुझे लगता है कि उन में एक तो है शिक्षा दूसरी है रक्षा और तीसरी है पेट के लिए भिक्षा। इन्होंने भिक्षा का तो सारा दायित्व अमेरिका पर छोड़ दिया है। जो खाने का प्रबन्ध करें। वह अमेरिका करे। जहां तक रक्षा का सवाल आता है, लगता है कि यह प्रबन्ध खुद करे और जहां तक शिक्षा का सवाल आता है, लगता है कि वह सारा काम इन्होंने इंग्लैंड और उस की मिशनरीज पर छोड़ दिया है। हमारी शिक्षा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वही टिपिकल टिपिकल लिटिल स्टार, आज भी चालू है अंग्रेजों के जाने के बाद भी। शिक्षा से आदमी सुसंस्कृत हो कर आखिर अपना दायित्व निभाने वाला नागरिक बन कर सामने आए, यह सभी हम ने सब छोड़ दिया है। इसलिए अभी जो शिक्षा का सवाल आया, प्राथमिक शिक्षा का सवाल आया और जैसा कि मेरे मित्र श्री बड़े जी हैं, उन्होंने बताया है कि यह जो वनवासी क्षेत्र है, उसकी शिक्षा का भार सब मिशनरीज पर हमने छोड़ दिया है।

आजादी के बाद हमारे घर का काम कोई दुनिया वाला करे, इसका क्या मतलब है यह समझ में नहीं आता है। देश की रक्षा करने के लिए हथियारों की जरूरत है तो वे आपके पास नहीं हैं। जरूर हम हथियार लें अगर हमारे पास हथियार नहीं है। लेकिन हथियार भी उन्हीं के और लड़ाई भी हमारे लिए वही करें, यह बात समझ में नहीं आती है, बिल्कुल समझ में नहीं आती है। जिस क्षेत्र तक हम पहुंच नहीं पाते हैं वहां कोई और अगर पहुंच जाता है तो इसको आप रोकें। अंग्रेजी की एक कहावत है फूल्ज रश व्हेअर एंजल्स फीअर टू ट्रेड। किन्तु सारे हिन्दुस्तान के अन्दर मिशनरियों का जो इतना बड़ा जाल बिछ गया है, उसे देखने से तो ऐसा लगता है कि शासन ने यह तय कर लिया है कि एंजल्स रश व्हेअर फूल्ज फीअर टू ट्रेड कौन से एंजल्ज के रूप में ये वहां जा रहे हैं वहां स्कूल ये खोलते हैं, अस्पताल खोलते हैं, शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं। कोई कोई तो फादर फेरर जैसे खेती के काम में आने वाले पम्प भी देते है, इंजन भी देते है, मशीनें भी देते है, फर्टिलाइजर भी देते हैं, अच्छा बीज भी देते हैं। जब इन्होंने ही सब कुछ करना है तो पता नहीं यह सरकार किस लिए है? यह दायित्व आप अपने ऊपर क्यों नहीं लेते हैं। प्राथमिक शिक्षा के लिए कितना पैसा चाहिये, इसको अभी मंत्री महोदय ने बता दिया है। शिक्षा देना भी एक आवश्यक काम है और उसके लिए आपको पैसा जुटाना पड़ेगा। यह कह कर काम नहीं चलेगा कि शिक्षा के लिए इतना पैसा चाहिये जिस को आप जुटा नहीं पायेंगे। ऐसा कह कर काम नहीं चलेगा।

हमने स्वाधीनता प्राप्त करने का व्रत लिया था और सब कुछ न्यौछावर करने का व्रत लिया था। तब कहीं जा कर स्वतंत्रता आई और हम स्वाधीन हुए। अब स्वाधीनता को बनाये रखने के लिए, स्वाधीनता के स्व को बनाए रखने के लिए सब कुछ स्वाहा करने की प्रवृत्ति क्या इस देश में पैदा नहीं हो सकती है। किंतु उस दृष्टि से हमने

कुछ प्रयत्न किया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। मैं शिक्षा मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि पिछले 23 सालों के अन्दर शिक्षा में क्या हमने कोई ऐसा परिवर्तन किया है ताकि आदमी के मन पर ऐसे संस्कार पैदा हों कि यह मेरा देश है और इसके लिए मैं सब कुछ न्योछावर कर दूंगा। उस के हृदय में यह भावना घर कर जाए कि जिस भूमि पर वह पैदा हुआ है और जिस मिट्टी में वह पला है उसमें पाविसूद भरा हुआ है। इसमें परमार्थ भरा हुआ है। जिस देश के अन्दर विवेकानन्द और राम कृष्ण स्वामी पैदा हो सकते है उस देश के अन्दर शिक्षा के कार्यभार को सम्भालने के लिए वैसा कोई पैदा नहीं हो सकता है, इसकी कल्पना मैं नहीं करता हूं। मैं ऐसी अवस्था में जानना चाहता हूं कि शासन का कर्तव्य क्या है? गृह मंत्री जी से हमारे बाबू राव पटेल जी ने एक सवाल किया था क्रिस्चियन मिशनरीज के बारे में। इस सवाल के जवाब मे उनको यह बताया गया था कि यहां 6420 मिशनरी है। 1956 में मध्य प्रदेश सरकार ने जो नियोगी समिति नियुक्त की थी उस समय यहां केवल चार हजार मिशनरी थे। दस बारह साल मे इनकी संख्या बढ़ कर छः हजार हो गई है। उस समय बाहर से आने वाली राशि 29 करोड़ थी और आज वह राशि 66 करोड़ है। मंत्री महोदय तो कहते है कि शिक्षा के लिए पैसा नही है, अस्पतालों के लिए पैसा नहीं है, ओल्ड एज पेंशन के लिए पैसा नहीं है लेकिन वह देखें कि दुनिया वाले किस तरह से आगे बढ़ कर पैसा खर्च कर रहे है। 29 करोड़ से बढ़ कर यह राशि 66 करोड़ हो गई है और संख्या चार हजार से बढ़ कर छः हजार हो गई है। मै पूछना चाहता हूं कि आखिर इसके पीछे विचार क्या है? मानवता का विचार है? मानव सेवा का विचार है? हमारे लिए इसकी पृष्ठभूमि को समझना बहुत आवश्यक है।

यह जो विधेयक मैंने उपस्थित किया है इसके दो पहलू हैं। एक तो जो नाबालिग हैं उनके धर्म परिवर्तन पर रोक लगाना इसका उद्देश्य है। दूसरे जो बालिग धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं वे ऐसा करने के लिए जिलाधीश की अनुमति लें। आज दल बदल की प्रवृत्ति पर रोक लगाने की चर्चा चल रही है? आखिर क्यों? किसी के विचारों मे परिवर्तन आ सकता है और उस अवस्था में अगर कोई दल बदल करता है तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। विचारों मे परिवर्तन सदा होता रहता है। एव्री मोमेंट ए मैन बिकम्ज न्यू। नए विचार उसके मन में आ सकते हैं, परिस्थितियां बदल सकती हैं और उसके हिसाब से उसके मन के विचार भी बदल सकते हैं। अशोक मेहता ने 1954 में बैटोल अधिवेशन में एक थीसिस रखा था कम्पलशंज आफ अंडर डिवेलेप्ड इकोनोमी। उनको लगा कि अविकसित देश मे सरकार का विरोध करना ठीक नहीं है। कुछ सवाल उपस्थित हो जाते हैं जो नैशनल इम्पार्टेंस के होते है। जैसे चीन का डेंजर उपस्थित हो गया था। चीन ने हम पर हमला किया तो हमारे देश के लोगों ने यह सोचा कि यह सवाल कोई कांग्रेस या जनसंघ का सवाल नहीं है, किसी दूसरी पार्टी का सवाल नहीं है। चूंकि यह राष्ट्रीय संकट है इस वास्ते इस संकट का सामना कंधे से कंधा मिला कर किया जाना चाहिये। वह नैशनल कम्पलशन थी। श्री अशोक मेहता ऐसी अवस्था में यदि कांग्रेस में चले जाते हैं तो किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये क्योंकि उनके विचारों मे मौलिक परिवर्तन आ गया था। लेकिन आज कल क्या चलता है। बिहार की गवर्नमेंट पलट जाती है, मैसूर की पलट जाती है, गुजरात की पलट जाती है। कोई इधर से उधर जाता है और कोई उधर से इधर आता है। सुबह इधर होता है तो रात को उधर। रात को उधर होता है तो सुबह इधर आ जाता है। इस तरह की प्रवृत्ति पर इस वास्ते रोक लगाना जरूरी हो गया है।

यह सब कुछ लालच और मोह से होता है। दृष्टि मंत्री-पद की गद्दी पर रख कर आदमी का भाव उधर ले जाता है। इस पर रोक लगाने की बात आई। कोई सोच-समझ कर, अपने विचार में परिवर्तन कर के जाता है, तो किसी को भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वैसे ही यदि कोई व्यक्ति, कोई सज्जन, अपने पन्थ या परमात्मा की भक्ति के मार्ग को बदलना चाहे तो, कम से कम

[श्री जगन्नाथराव जोशी]

भारत में उस पर कोई रोक नहीं है—कोई रोक नहीं हो सकती है, क्योंकि भारत का विचार ही अलग है। इसलिए जिसको हम धर्म समझते हैं, वही उपनिषदों में कहता है "एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"—सत्य एक है, ट्रुथ इज वन, किंतु कई मुखों से उसका उच्चारण होता है, उसको प्राप्त करने के मार्ग कई हैं, अनेक हैं। इस लिए पन्थ उप-पन्थ से अपना देश भरा हुआ है। कोई जैनी अपना ग्रन्थ छोड कर शैव, वीरशैव, वैष्णव या सनातनी बने, इस देश में उस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वैसे ही यदि कोई इस्लाम, ईसाइयत या जूडाइज्म स्वीकार करे, तो किसी को उस पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए-कम से कम भारत में तो नहीं होती है।

एक आक्रमणकारी रूप मे आने से पहले पन्थ हमारे देश में विचार के रूप में भी आये थे—ऐसा नहीं कि विचार के रूप में पन्थ हमारे देश मे नहीं आये थे। विचारों का आदान-प्रदान सदा इस देश में चलता रहा है।

किन्तु पन्थ के इस परिवर्तन का एक राजनैतिक पहलू भी है, जिस की वजह से आज भी हम भुगत रहे हैं। इस देश मे इस्लाम आया। यदि वह परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग को लेकर आता, तो कोई आपत्ति नहीं होती। किन्तु वह एक आक्रमण के रूप मे आया। वह एक ज्ञान देने के रूप में नहीं आया, वह परमात्मा की प्राप्ति का एक अलग मार्ग दिखाने के रूप मे नही आया। यदि वह उस रूप मे आता, तो जिस स्थिति नही में हम आज हैं, वह स्थिति न होती।

जब इस्लाम पन्थ एक आक्रमण के रूप मे इस देश में आया, तो उसने लोगों को देश के मूल जीवन-प्रवाह से पृथक कर दिया। यह अलगाव की प्रवृत्ति उसका एक रूप है। जो कोई वास्तव में एक पंथ स्वीकार करता है। उसे बदलना नहीं चाहिए। हमारे देश में जो एक ग्रंथ बिल्कुल सिद्धांत रूप से स्वीकारा हुआ है—गीता, वह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है, "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः।" किसी पर इस विषय में कोई रोक नहीं है। हमारे यहा अन्य लोगों की तरह यह नहीं माना जाता है कि जो क्रिश्चियन न हो, वह हीथन है और वह हीथन स्वर्ग में नहीं जा सकता है। दुनिया में क्रिश्चियेनिटी के आने से पहले वे कहां जाते थे? बे आर डेंटिड टु अन-नोन लिम्बो। व्हाट इज दिस लिम्बो? वहां उनका क्या होगा? आगे क्या होगा, पीछे क्या होगा?

भारत यह नही कहता है। व्यक्ति किस में विश्वास रखता है, यह सवाल नही है। जिसमे वह विश्वास रखता है, वह उसमे एकाग्रता के साथ आगे जाये, तो उसको उसका मोक्ष मिलेगा। इस लिए यह बडा है, यह छोटा है, यह नही हो सकता है। केवल मूर्ति बड़ी या छोटी हो सकती है। जैसे, साठ लाख रुपये का शायद एक नोट हो और अगर सांठ लाख रुपये के एक एक रुपये के नोट हों, तो उनका बडा भार हो जायेगा, लेकिन उन दोनों की कीमत तो एक ही होती है। इसलिए छोटे-बड़े का सवाल नही है।

इस देश में ये जो पन्थ आये, यदि वे इस बात को स्वीकार कर के चलते, तो इस देश मे पाकिस्तान न बनता। किन्तु पाकिस्तान बनने के बाद भी सरकार ने इस पर ध्यान नही दिया है। इसलिए आज हमारे सामने काश्मीर का प्राबलम खड़ा हुआ है। हमारे मित्र, शेख अब्दुल्ला कहते हैं कि मैं भारत का नागरिक भी नहीं हूं। यानी हजारों हजार साल से एक पराक्रम की परम्परा को लेकर, कई आक्रमणकारियों के हमलों को परास्त करके, जो स्वाभिमान के साथ और उन्नत मस्तक कर के खड़ा रहना चाहता है, उस देश का मैं नागरिक हूं, यह कहने में अभिमान महसूस न करने वाला व्यक्ति उस देश में पैदा कैसे हुआ? आज भी 54 करोड़ की ताकत को लेकर हम संसार में खड़े हैं। आज भी पैटन टैंकों को तोड़-फोड़ कर दुनिया को चकाचौंध करने वाला पराक्रमी जवान इस देश में पैदा होता है। जहां तक सम्पत्ति का सम्बन्ध है, हमारा देश साधनों से भरा हुआ है। घास की पत्ती से लेकर यूरेनियम तक सब कुछ यहां मौजूद है। ऐसी स्थिति में भी

किसी को यह कहने में अभिमान क्यों है कि मैं इस देश का नहीं हूं ? कारण यही है ।

सभापति महोदय : हाउस के सामने जो बिल है, वह है "टु रेस्ट्रिक्ट दि कनवर्शन आफ रिलिजन आफ माइनर्स ।" लेकिन आप तो समूचा कवर कर रहे है, बहुत बड़ा एरिया कवर कर रहे हैं ।

श्री जगन्नाथ राव जोशी : यह जो हो रहा है, हुआ है वह मैं बता रहा हूं । नहीं तो काहे के लिए बिल लाया ? फिर तो मुझे जरूरत ही नहीं थी बिल लाने की । फिर तो 54 करोड़ में 54 करोड़ ही रहने दीजिए । फिर इस बिल की कोई जरूरत नहीं है । यह क्यों हो रहा है ? यह अलगाव का भाव जब आएगा तब होगा । इसलिए मैं कह रहा हूं कि यह बलात नहीं होना चाहिए, लालच से नही होना चाहिए, मोह से नहीं होना चाहिए, भय से नहीं होना चाहिए । इसलिए मैंने प्रारम्भ मे ही बताया कि सोच समझ कर कोई परमात्मा की प्राप्ति के लिए स्वीकार करता है तो इस मे किसी को कोई आपत्ति नही हो सकती । यह तो मैंने पहले ही बता दिया । किन्तु जो हुआ है उसका मै परिणाम बता रहा हूं । यह नही बताया तो इस बिल की कोई जरूरत नहीं है । जब कोई पंथ अलग हो जाता है तो यह एक अलगाव का भाव नहीं होना चाहिए । वह इस देश के साथ जुड़ा हुआ हो, इस देश के जीवन-प्रवाह के साथ जुड़ा हुआ हो ।

अब मैं इसका एक उदाहरण देता हूं नागालैंड का । क्या अपने देश में मांग नहीं हो रही है अलग राज्य की ? हो रही है । यह क्यों हो रही है ? Within the framework of the Constitution of this country, there can be any number of States, big or small. यह हो सकता है । किन्तु जब कोई यह मांग करे कि हमारे राज्य का नाम ही नागालैंड रहे तो इसका क्या मतलब है ? यह बात समझ में आ सकती है कि मातृ-भूमि रहे, भारत माता रहे, नागा-नाडु रहे, वह तो कहिए भारत माता ही है । कोई लोग कहेंगे— What is in a name ? तो मुझे कहना पड़ेगा—There is much in a name. यह जो माउंट बैटन के साथ हमारा बहुत नजदीक का संबंध रहा, यह पुरानी जर्मन फेमिली है उनकी । उनका पुराना नाम था बैटन बर्ग । बर्ग लगते ही किसी को भी पता लगेगा कि यह जर्मन फेमिली है । तो क्यों कि इंग्लैंड और जर्मनी का रिश्ता रहा, यह रायल घराने के आदमी थे तो इंग्लैंड में जा कर जब यह सेटिल हो गए तो इन्होंने सोचा कि इस नाम से यह लगेगा कि यह जर्मन हैं, इसलिए इन्होंने अपना नाम बदल कर बैटन बर्ग के बजाय माउन्ट बैटन कर लिया । उलटा किया उसको । अब कोई कहेगा कि What is in a name ? तो There is much in a name.

मैं गोआ जेल में भी रहा । यानी किसी के कोई नया पथ स्वीकार करने में मुझे कोई एतराज नहीं है, यह मैं फिर बता रहा हूं । लेकिन वहां मैंने बहुत से मित्रों से पूछा—यह डी कास्टा, डी सूझा क्यों ? Why did you give up Desai ? इससे क्या बिगड़ता है ? आप देसाई रहिए । आप खुद का नाम बदलना चाहते है तो बदल दीजिए । जगन्नाथराव के बजाय जोसेफ कर दीजिए, मुझे कोई आपत्ति नहीं । कोई विवेकानन्द की जगह अपने लड़के का नाम स्टालिन रखे, रखे । कोई लेनिन रखें, रखे । कोई आइसन हावर रखे, रखे । किन्तु हम परिवार का नाम क्यों बदलें ? जैसे अभी कर्णी सिंहजी के लिए कहा, भले ही कर्णी सिंह जी महाराज न हों, लेकिन उनके पिता जी तो महाराजा थे । That was a fact, a historical fact. देसाई का De'souza क्यों रखना चाहते है? यह साहू मोदक सिनेमा एक्टर है, वह क्या ईसाही नहीं है ? कई मेरे नाम वाले ईसाई है, जोशी नाम वाले ईसाई है ? आखिर यह सवाल तो परमात्मा की प्राप्ति का सवाल है । लेकिन जो अपनी राष्ट्रीय संस्कृति होती है खान-पान रहन-सहन यह सब उसमें आ जाता है । अब देखिए डी-सौजा यह लैटिन नाम है । डी—मेलो, डी-सौजा, यह लैटिन के हैं । यह इंग्लैंड में नहीं मिलेंगे । यह फ्रांस में मिलेगा, इटली में मिलेगा, स्पेन में मिलेगा, पुर्तगाल

[श्री अनन्तराव जोशी]

में मिलेगा। तो आखिर, इस नाम के साथ कोई पंथ का सवाल नहीं है। इसलिए पंथ के रूप मे केवल आ जाता है तो यह अलगाव का भाव देश के अन्दर पैदा हो जाता है और जब अलगाव का भाव पैदा होता है तब यह प्रवृत्ति बढ़ती है। हमारी सरकार कहती है—Religion should be divorced from politics ठीक है। किंतु नागालैंड की समस्या हल करने के लिए मध्यस्थ के रूप मे बैप्टिस्ट मिशन के साथ बात करते हैं। How this Baptist Mission figures in political activities? यानी कल जाकर हमारी राजनीति मे कोई ऐसे मिशन्स दखल देने लगे और सरकार रेकग्नीशन दे उसको यह क्या है? कोई उनको स्वयं की राजनैतिक पार्टी बने, तो मैं समझ सकता हूं। लेकिन खुद बैप्टिस्ट मिशन मध्यस्थता करे, इसके क्या मानी है? और डा. फिजो यहां से निकले, माइकेल स्काट के घर में जाकर इंग्लैंड मे रहे। आसाम से हमने मिशनरियों को बाहर निकाला। क्यों निकाला? We think they are security risks. Why they should be security risks? सवाल यही है। इसलिए आजाद होने के बाद हमारी शिक्षा हो, हमारी चिकित्सा हो, इसको शासन करने की कोशिश करें, किसी दूसरे के ऊपर हम यह दायित्व दे दें तो इससे कई चीजे पैदा होंगी। मैं नियोगी कमेटी की रिपोर्ट कोट नही करना चाहता। उन्होंने खुले आम इसको स्वीकार किया कि यह लोभ से होता है, लालच से होता है, मोह से होता है, भय से होता है जो खराब है, बुरा है। इसके और भी पहलू हैं। जोर जबर्दस्ती चलती है। इसलिए मैं प्वाइंटेडली इसकी तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। काश्मीर में परमेश्वरी हांडू यह नाबालिग लड़की थी, उसको भगाया गया। उसकी माता ने मांग की कि उसको कोर्ट के सामने पेश किया जाय। वह खुद चली गई या भगाया गया? बालिग है या नाबालिग है इसका फैसला होना चाहिए था। अभी तक फैसला नहीं हो पाया। ऐसे केसेज कई है। फोर्सिबल ऐबडक्शन जिसे कहते हैं Forcible abductions result in conversions यह केरल में चलता है। इसका हैदराबाद केन्द्र है और हमारी सरकार के कान पर जू नहीं रेंगती है। मैं सारे भारत मे घूमता हूं, मैं जानता हूं ऐसे केसेज को। यह कोई प्रेम विवाह नहीं है।

कोई खुद अपनी मर्जी से सोच समझ कर, प्रीति के साथ करे तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, लेकिन when it is a case of forceful abduction तब तो ऐसा नही होना चाहिये। मैंने दो साल पहले यह सवाल चव्हाण साहब के सामने रखा था, लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया। Is there any law in this land or not?

17 hrs.

यह जो कन्वर्शन फोर्सिबली अपने देश मे होता है, बडे पैमाने पर होता है, बच्चों को भगाया जाता है, अनाथ बच्चों को शिक्षा देने के बहाने दूसरे देशो मे ले जाया जाता है—यह सब कैसे हो रहा है? हिन्दुस्तान मे अनाथ बच्चे है, जहा सरकार का शासन है, उनको अनाथ क्यो कहा जाता है, उनको अनाथ कहना पाप है, उनकी पिता सरकार है। आज हमारी सरकार को शर्म नही आती है—हम अनाथ गृह खोलते है, मानो 54 करोड मे बच्चा अनाथ बन जाता है, मा का पता नही, बाप का पता नही। यह जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए, शासन को लेनी चाहिए। किन्तु ऐसा न करते हुए, हमारे बच्चे बाहर भेजे जाते है। यूरोप मे घर मे काम करने वालों की कमी है, इस लिये यहा से बच्चों को वहा भेजा जाता है, फिर कोई उन को देखने वाला नही है। केरल से नर्सेज को भेजा गया—मैं फिर बताना चाहता हू कोई सोच-समझ कर जाय, तो मुझे आपत्ति नही है—लालच से भेजा गया और हम को पता भी नही। जब इंग्लैंड के टाइम्स ने लिखा, तब हमारी सरकार को पता लगा। जब न्यूयार्क टाइम्ज कोई बात लिखता है, तब हमारी सरकार को पता चलता है। मैंने दो-तीन साल पहले सवाल पूछा था कि कितनी लड़कियों को भेजा गया तो जवाब मिला—'Information is being collected'. Government is still collecting the information!

मैंने पूछा—इसकी जांच करने के लिये आप के पास कौन-सी मशीनरी है, जिससे आप पता लगा सकें कि केरल से जो लड़कियां भेजी गईं, कुछ जर्मनी भेजी गईं, कुछ इटली गईं, कुछ नर्स बनी, कुछ और बनीं, उनका जीवन क्या है—कुछ जवाब नहीं है। मुझे वहां से पत्र मिले हैं—जर्मनी से पत्र मिले, उन लड़कियों ने बताया कि हम यहां बड़ी विचित्र स्थिति में है, हम यहां से जा नहीं सकते है, हमारी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। हमारी एम्बेसी सहायता नहीं करती है, क्योंकि हमारी एम्बेसी को पता ही नहीं है कि कौन कौन लोग वहां पर है। मद्रास का एक लड़का लन्दन में मर गया—पता ही नहीं कि कौन लड़का था। हमारी एम्बेसी है, हाई कमीशन है, उनको पता ही नहीं रहता है। छोटे-छोटे नाबालिग लड़कों-लड़कियों को भेजा गया, माइनर्स को भेजा गया, एजूकेशन के लिये भेजा गया, कैसे उनको पी-फार्म मिला, कैसे उन को पैसा मिला, कौन ले गया—कुछ पता ही नहीं है—मैं समझता हूं कि यह अच्छा नहीं है, ठीक नहीं है।

केवल पंथ की दृष्टि से कोई परिवर्तन करना चाहे तो मुझे आपत्ति नहीं है, किन्तु हमारे संविधान में जो छूट दी है, उसमें प्रोपेगेट शब्द है, कन्वर्ट शब्द नहीं है—

> All persons are equally entitled to freedom of conscience and the right freely to profess, practise and propagate religion.

कोई कुछ भी कर सकता है, ऐसी बात नहीं है। इसी लिए मैंने इस में रजिस्ट्रेशन रखा है। जब शादी का रजिस्ट्रेशन हो जाता है तो कोई पंथ को बदले तो उसका भी रजिस्ट्रेशन होना चाहिये। रजिस्ट्रेशन होना इसलिये भी जरूरी है कि शुक्ला साहब फिर यह जवाब नहीं दे सकेंगे—हमारे यहां ऐसी व्यवस्था न होने से, हम को मालूम नहीं है कि कितने कन्वर्शन हुए है। वह कहते हैं कि हम को मालूम नहीं है कि क्यों कन्वर्शन होते है। लेकिन इस मेगजीन से आपको पता चल जायगा कि कहां कहां यह एक्टिविटी चल रही है। आप इसको पढ़ेंगे तो आपको मालूम होगा कि आंध्र प्रदेश में, आसाम, बिहार, गुजरात, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, नागालैंड, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, वैस्ट बंगाल, यूनीयन टैरिटरी में—दिल्ली, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश, पांडिचेरी, गोआ-दमन-दिव, चंडीगढ़—यानी सब जगह चल रही है। मानवता के रूप में सेवा करने के लिये बाहर वाले आते हैं और हम समाजवादी सरकार, आम आदमी की उन्नति करने वाली सरकार, किसके बल-बूते पर चलते है, दूसरों के बलबूते पर क्यों चलते हैं—इसकी क्या आवश्यकता है। अगर आपको कुछ लेना है तो सहायता लीजिये, जैसी हमने मांग की थी, उस सहायता को आप लीजिये और सरकारी एजेन्सी उस काम को करे, सरकारी मशीनरी उस काम को करे, लेकिन उन पर यह काम नहीं सौंपा जाय।

एक मिशनरी से मेरी बात हुई थी—मैंने कहा—मैं मान लेता हूं कि आप यहां सेवा क्यों करते हैं, क्योंकि आप को लगता है कि ईशू-मसीह का विचार यदि नहीं बताया तो वह "हैल" में जायगा और ईशू मसीह का विचार खराब भी नहीं है। उन्होंने कहा एक बार ऊंट सूई की नोक में से चला जायगा, लेकिन धनी आदमी स्वर्ग में नहीं पहुंचेगा। ईशू मसीह ने शांति का सन्देश दिया। फिर मैंने पूछा—जिन लोगों ने इसाइयत को स्वीकार किया, क्या वे उस पर अमल कर रहे है? दुनिया पर दो महायुद्ध जिन्होंने ठूंसे, वे कौन लोग थे, वे सब क्रिश्चियन कन्ट्रीज थी।

ईसा मसीह ने बताया था कि एक गाल पर कोई मारे तो दूसरा भी सामने कर दो। जापान ने एक मामूली बम फैंक दिया तो It was returned by an atom bomb by America यह कौन सी इसाइयत है? वास्तव में केवल कहना ही नहीं बल्कि उस पर अमल भी करना चाहिये। सवाल यह है कि बुराई किस में नहीं है। हिन्दुस्तान सबको मानता है, सबका समादर करता है, इस लिये कोई ऊंचा-नीचा नहीं हो सकता है और भगवान की प्राप्ति का सन्मार्ग एक ही हो

[श्री जगन्नाथ राव जोशी

सकता है। तो जब सब एक हैं फिर यह धर्मान्तरण क्यों है। यह करने की कोशिश क्यों है ? मुझे पता है गांधीजी के पास कई मिशनरी आते थे—और कहते थे गांधीजी, आपका जीवन...(व्यवधान)..

श्री बी० आर० शुक्ल (बहराइच): सभापति महोदय, यह विषय इतना व्यापक है ? धर्म, इतिहास, गवर्नमेन्ट, सभी कुछ माननीय सदस्य डिस्कस कर चुके है ?

सभापति महोदय : अब आप समाप्त कीजिये।

श्री जगन्नाथ राव जोशी : हमारे धर्म में हर एक को अधिकार है, इसी लिये मैंने शुरू में बताया—स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः। कोई छोटा बड़ा नहीं हो सकता है। मैं आपको उदाहरण देता हूं—एक सज्जन आये, आज के जो शंकराचार्य हैं वे नहीं, बल्कि उनके पहले जो शृंगेरी के शंकराचार्य थे उनके पास, और बोले कि मैं हिन्दू बनना चाहता हूं। उन्होंने कहा—मतलब क्या है, तुम तो क्रिश्चियन हो न ? वह बोले—जी हां। तो उन्होंने कहा—पहले समझने की कोशिश करो और यह तीन बातें करो। पहली बात तो यह समझने की कोशिश करो कि क्रिश्चियन के मायने क्या है ? दूसरी बात—इस जन्म में आप क्रिश्चियन बने हैं तो इस जन्म में आप क्या साध्य करना चाहते हैं, इसको तय करो—और तीसरी बात यह—कि क्रिश्चियन रह कर आप वह प्राप्त कर सकते हैं या नहीं, इस नतीजे पर पहुचो तब मेरे पास आओ। इसका मतलब है हिन्दुत्व। आप क्रिश्चियन कहते हैं तो क्रिश्चियन बन जाओ और आपको अपने साध्य को प्राप्त करने की कोशिश करो। इसलिये आखिर इस का विरोध क्यों ? अपने देश में जब खुली छूट है यानी आपको परिवर्तन करना चाहिये—इसकी आवश्यकता नहीं है। बलात परिवर्तन नहीं करना चाहिये।

It is against the very essential principle of our understanding. यह हमारे सिद्धान्त के खिलाफ है। हमारा भारत आजाद नहीं बने तो फिर क्या बने ? जब खुली छूट देकर दुनिया के सामने स्वामी विवेकानन्द महाराज ने शिकागो में विश्व धर्म परिषद् में हिन्दुस्तान के विचार बताये, इतने बड़े विचार बताये और इतना सब होने के बाद भी दुनिया वाले हम को सिखाने के लिये आये। मेक्समूलर साहब हिन्दुस्तान में सिखाने के लिये आने वाले थे।

सभापति महोदय : आप समाप्त कीजिये। जो आपका बिल है उसमे आपने बहुत ज्यादा कवर कर लिया है। आपका बिल नाबालिग बच्चों के धर्म परिवर्तन के बारे मे था, लेकिन आपने सारी बातें कवर कर ली।

श्री जगन्नाथ राव जोशी : जो वयस्क हैं, वह भी यदि परिवर्तन करना चाहता है तो उसका रजिस्ट्रेशन होना चाहिये, यह इसमे है। यदि आप हमको यहां बताने की इजाजत नहीं देंगे तो क्या बाहर बतायेंगे। हमारा विचार क्या है उसको बताने की इजाजत हमको नहीं होगी तो फिर उसका पता कैसे चलेगा....(व्यवधान)...

मेरे कहने का तीसरा मतलब यह है कि यह केन्द्र की जिम्मेदारी है कि बड़े पैमाने पर यह जो चलता है, वनवासी लोगों मे चलता है, पिछड़े हुए लोगों मे चलता है, उसको रोकने का दायित्व सीधा केन्द्र से सम्बन्धित है। डाइरेक्टिव प्रिन्सिपल्ज मे यह कहा गया है—They must be free from exploitation.

उनका जो एक्सप्लायटेशन इस दृष्टि से होता है, बलात होता है, मोह से होता है, लालच से होता है, भय से होता है, उससे मुक्ति देना क्या यह केन्द्र का दायित्व नहीं है ? खुले रूप में कोई परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग दिखाये तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। नियोगी कमेटी की रिपोर्ट में जो जो बताया गया है मैं उसको यहां पर दोहराना नहीं चाहता हूं। इस लिये केन्द्र की जो जिम्मेदारी है, उस को वह स्वीकार करे। जो भी धर्म बदलना चाहता है, सोच समझकर बदलना चाहता है, उसको अनुमति देनी चाहिये और

जहां तक वयस्क का सवाल है उन पर पूरी रोक लगे । क्योंकि उनकी आयु ऐसी नहीं है जिसमें वह समझ सकेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है । हमने उनको 21 साल तक वोटिंग का अधिकार नहीं दिया है, यानी पांच साल तक यहां कौन सरकार रहे उसको तय करने का अधिकार भी उनको नहीं है, तो फिर समग्र जीवन किस विचार से, किस हेतु से, किस दिशा से, किस ध्येय से प्रेरित होकर वह चलें, इसका निर्णय भी वह नहीं कर सकते हैं । इस लिये उस पर रोक लगनी चाहिए । जो व्यस्क है, वह परिवर्तन करना चाहता है तो उसकी अनुमति ले--यह दो बातें मैंने इस बिल में रखी हैं; जिनकी जिम्मेदारी केन्द्र सरकार पर है । उड़ीसा और मध्य प्रदेश शासन ने जिस प्रकार से कानून बनाये हैं, वैसे ही केन्द्र भी बनाये ।

MR. CHAIRMAN : Motion moved:

"That the Bill to restrict the conversion of religion of minors be taken into consideration."

There is an amendment given notice of by Shri M.C. Daga. But the hon. Member is absent. So, it is not moved.

श्री कमल सिंह 'मधुकर' (केसरिया) : सभापति महोदय, जो भाषण माननीय जगन्नाथ राव जोशी जी ने दिया उसका बिल से कोई सम्बन्ध नहीं है । भाषण में केवल दूसरे धर्मों की आलोचना थी, और वह भी घृणास्पद । यह उचित नहीं है । भारतीय धर्म और संस्कृति, उपनिषद, वेदान्त, मीमान्सा, गीता और रामायण में जो बातें कही गयी हैं उन तमाम की अवहेलना करके ऐसा बिल लाना और ऐसा भाषण देना उचित नहीं है ।

यह जरूर है कि भारत में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख तमाम धर्म के लोग रहें और वह अपने अपने धर्म पर आचरण करें और पारस्परिक प्रेम से रहें जिससे तमाम धर्मों की एकता के आधार पर इस देश की संस्कृति का उदय हो । जब वह ईसाइयत के विषय में बोल रहे थे तो कहा कि उस धर्म में है कि अगर कोई गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरे गाल को सुपुर्द कर दो । इसके आधार पर उन्होंने क्रिश्चियानिटी की आलोचना की । लेकिन मैं माननीय जोशी जी से जानना चाहता हूं कि उन्होंने जिस हिन्दू धर्म की बात की उसी हिन्दू धर्म में कुछ जातियों द्वारा उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों पर कितना अत्याचार हो रहा है ? क्या आज भारतीय सभ्यता पर आचरण हो रहा है ? आवश्यक था कि जो अपने धर्म में खराबियां हैं पहले उनको दूर किया जाय और इस बात पर मनन किया जाय कि किन खामियों की वजह से, या प्रलोभन में आकर, या भय के कारण लोग धर्म परिवर्तन करते हैं ।

यह बिल तब आना चाहिये था जब मुगल पीरियड या ब्रिटिश पीरियड रहा । जबकि जन तांत्रिक समाज नहीं था । लेकिन आज के जमाने में जब देश में जनतांत्रिक समाज है, समाजवाद जहां पर लक्ष्य घोषित कर दिया गया है, तब ऐसे बिल को लाने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

धर्म के लौकिक और पारलौकिक दो पहलू है । आपने परलौकिक पहलू को छोड़ दिया लौकिक पहलू के लिये । इस देश में समाजवाद को लाने में सरकार की ओर से क्या खामियां हो रही है उनके बारे में बिल लाते तो समझने की बात थी । देश को बेहतर बनाने के लिये बिल लाते तो समझने की बात थी । लेकिन इन चीजों को छोड़ दिया है । इसलिये यह बिल बिल्कुल आउट मांडेड है, भारतीय सांस्कृति, सभ्यता, एकात्मता के खिलाफ है और देश की एकता के खिलाफ है । धर्मों में घृणा पैदा करने की भावना की अभिव्यक्ति इस बिल से होती है ।

उदाहरण स्वरूप आप ने अपने बिल में कहा है कि किसी बालक को धर्म परिवर्तन करना हो तो वह मैजिस्ट्रेट के यहां जाय । यह तो धर्म के एसेंस के खिलाफ कि भगवान की पूजा करने के लिये मैजिस्ट्रेट की आज्ञा लेनी पड़ेगी यह धर्म को पारलौकिकता से इहलौकिकता में लाने की प्रक्रिया है । हमारा ख्याल है कि माननीय जोशी जी ने अपनी संस्कृति और सभ्यता को पढ़ा नहीं है, केवल

[श्री कमल मिश्र मधुकर]

रट लिया है। इसी लिये आप इन चीजों को कोट करते हैं। इन चीजों का मनन कीजिये। यह बिल बेकार है और देश की प्रगति से इसका कोई संबंध नहीं है, देश की एकता और संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं है इसलिये ऐसे बिल को सदन को आउट राइट रिजेक्ट कर देना चाहिये ।

DR. MELKOTE (Hyderabad) : I rise to support the Bill wholeheartedly, Members may be surprised why I say this. But let us look at it from an unbiased point of view ; let no communal feelings creep into the discussion of this subject.

The point is this. The Bill says that minors should not be converted. Before the invasion of India by foreign powers, throughout that history conversion of large number of people had taken place here without bloodshed, rancour of fear.

How did this take place? To go into an analysis of this, we have to go into an analysis of Hinduism itself.

In the Mutts, religious centres and temples from where knowledge percolated to the people whether it was Europe or India, it was the Churches and Temples which gave knowledge to people right from time immemorial people were given the teaching from the Charvaka system itself. Then comes Nastik tva, non-acceptance of God or atheism. And then there is the other section which accepts the presence of God. I do not know how many of us have seen God or accepted Him. That is a different question altogether. But the Temples themselves taught the Charvaka system which is supposed to be the most materialistic system in the World. Possibly even the most modern communism cannot come up to that level. The Charvaka system says that Heaven and Hell are the creatoins of the priestly Brahamin class. If by offering the sacrifice of a got or a hen you can send your father to heaven, why don't you sacrifice him so that he can directly go to Heaven? If you can make your forefathers eat in Heaven the *pindas* that you place before them on the annual day, place this *pinda* here in Delhi and ask your father in Madras to eat it. Nobody has seen this. All this is nonsense. This is just for eking out a livelihood. This is the only life that one can see. After that we disappear. Therefore, make hay when the sun shines. Make merry. Beg, borrow or steal, whatever you like, because you have to be happy in this life There is nothin like an after life. This is the thing that was taught by the Charvaka system.

The common man likes this philosophy very much, but when he goes to the higher systems, Nyaya, Vaiseshika, Sankhya, Vedas, Upnishads and the Bhagabat Gita, the student is asked : You have learnt the Charvaka system, the most pitiless system in the world If this is the only life, you come out of matter and go back to matter. Why don't you stand in the middle of the road and allow a cart to pass over you? The man becomes afraid Why? you are going from matter to matter Nothing is lost. There is nothing like an after-life Then, why are you afraid? Then he begins to think about this life and then he gets the knowledge of the Nyaya Shastra, wherein the idea of the mind, the *buddhi*, the *Ahankara* or ego, how it is made up from out of atomic and sub-atomic particles is explained They go into these details. Twentyseven sub-atomic particles have been enunciated in the Nyaya system The Britishers and others came into our land and they translated it as logic. That is one of the greatest misfortunes that this country has suffered It is not the logic of the West It is scientific analysis of the mind due to *tapas*. They started with the atomic and subatomic particles. Now the Chinese have split sub-atomic particles. We go back to the twentyfour stages of Prakriti or nature itself. It is a misnomer to call it nature. Every thing is the final outcome of this nature or Prakriti. It is derived thus : *praa karoti*, that which moves. Therefore, the whole system of ancient religions was built up on exactly scientific basis, and this science should be understood and followed.

Conversion should be based on conviction of the mind. Conversion from Madhvaism to Shakaracharya's or from Shankaracharya's to Vishistadvaita was permitted at a stage when people understand the implications of these things and a minor was not allowed to get converted. Here on account of poverty these poor and uneducated people in the

villages are being converted without knowing what Hinduism is. It is to this aspect one has to take objection. Do not take it as a communal problem. I have been a follower of Mahatma Gandhi and a non-communal man throughout. It is Hydrabad that I stand for election every time. In my own constituency more than 50 per cent are Muslims. They have never called me a communal person. I have got their vote every time and this is the fourth time that I am sitting in Parliament. Therefore, when I am supporting him it is not from the communal point of view that I am supporting him, but from the point of view of the damage that is occuring to the country.

I had been to various parts of the world. When I go to Germany or England or Russia or Yugoslovia or Japan of Australia, people ask me about relegion. They also invite our students who go there to say something about Hinduism; they ask the Muslim students and they say they do not know anything. A Christian student says he dosen't know anything. The Hindu students, not being taught about the religion in the manner he ought to be taught, gives out a fantastic story about the idols and other things that we see in our temples without informing them how the whole thing is based on scientific data.

We have the Linga, It is exactly scientific data that should be understood. I would like to place before this House if sufficient time is given to me. All motion in this world is trajectory motion, that is the shape of Linga. The snake is there. What is it ? There is not snake at all. That is energy and motion and the body of the snake personifies energy. Nobody has seen energy because there is poison in it and the water that falls removes that poison. Is there light or colour outside? Where is this colour? What is this light? They are different wavelengths of energy. By reaction in the brain there is this colour. There is nothing outside. These are the aspects which they signify in relation to what you see. Padhartha vigyan and Dravyadhi guna vigyan are entirely two different things. There is physics for instance, there is chemistry. Certain reaction takes place in the mind. We have got to understand the aspects of the question. There is modern science, there is yoga; these things teach us the scientific aspects of it correctly unless we know that Hinduism has been built absolutely on modern scientific data it is no use trying to convert a person. A person has to have some idea of physics before he can get converted into a physicist. Similarly about chemistry. A particular professor begins to take physics or chemistry in a particular class. If there is conviction for me, there is conversion and I join that particular professor. There is no question of Hindu or Muslim or other things. It is conviction with regard to certain matter and ideas. So this type of conversion should not be perpetrated. Unless there is conviction it is unfair. Unless a person has attained the age and can understand what is being talked and unless a person is convinced after understanding these things, if you try to convert a person becuase he is poor and becuase he is uneducated I think this exploitation appears more political than otherwise. That is why I am supporting this Bill, not because I am communal, not because I want to protect Hinduism. People should be able to see the scientific data behind Hinduism and this scientific data has to be appreciated by everybody and conversions should take place only when there is conviction.

I was talking of the Siva Linga. I referred to Padartha vigyan; it takes place in the mind. Translated, Padarta means rather substance. What do we mean by padartha? Artha means object. Object is something outside. You go and sit and I understand you are there. What happens? The energy strikes you and coming back and striking my eye is taken to the brain and there it reacts in the brain. The reaction of the brain is not seen until your mind is attached to it. When your mind is attached to that, you begin to react. This reaction gives you meaning and you see the meaning in the brain and man communicates with the world.

And the world is *padartha*. *Padartha* meant what was registered in the brain in relation to what was seen. This is not Mendel's philosophy. It is called philosophy. It is an application of modern physics. What is happening in your psychology? One has, therefore, to understand the implications of these things.

Therefore, on the Shivlinga, with the snake twining it around, you do not see the reality as such. You see something which is registered in the brain. The reality is hidden.

[Dr. Melkote]

That is *maya*. And the reality being hidden, anything that you see is registered in your mind. What is the reality? anything that you see is registered in your mind. What is the reality? That is not what you can just wash off. What does one do through *tapas* or through scientific data? What do you do? We cannot just wash a thing out; it is not correct. like this, whether it is the idol of Nataraja, or whether it is Krishna Leela, whether it is Shiva with the snake and the braid, I can give the scientific data with regard to all those things. These have got to be understood. Unfortunately, in your universities and colleges, this is not being taught. The students will have to know this, and we will have to explain to the whole world.

When we go to Europe, America, Germany and other places, they appreciate our points and say, , "Why don't you continue it through science?" That is a different question altogether. They are attracted towards these ideas. They want to get converted into our religion. I have been a disciple of Shri Ramana Maharshi. When many people from foreign countries came and asked him, "We would like to become Hindus," he asked them why. What is this conversion? One has to be convinced, Try to find out. No conversion took place in India at any time. It is only a conviction that was prevalent in India; that was possible in India. In the place of these facts, you want to convert the younger generation and uproot this system that was prevalent in India, particularly those scientific data. What is it that you are going? Are you not losing your cultural background? You are not only losing that but other values which have come down to us.

That is why I rather support the Bill, but from a different angle, and that is absolutely from the scientific point of view.

SHRIMATI LAKSHMIKANTHAMMA (Khammam) : Sir, before I come to discuss this Bill, I would like to tell the hon. House what the meaning of religion is. Religion is a latin word from which the word RELIGION, meaning; whence you have come, where you have come.

MR. CHAIRMAN : Please realise my difficulty. Those who are speaking are speaking on religion and explaining something about religion. But the Bill is quite definite. That is, whether a minor should be allowed to change his religion or not. Whether you are in favour of it or against, why you are in favour of it or against it-those arguments alone need be placed before the House.

SHRIMATI LAKSHMIKANTHAMMA : The very meaning of the word religion has first to be understood, because I say that there is only one religion. My appeal to this hon House is that we should evolve a synthesis of all religions, and then get something out of it and see that children are educated, not that we neglect children in this particular aspect of it, or that we have any dislike or hatred for other religions. It is not that there is religious exploitation or anything of that kind, but the difficulty comes in because of political exploitation of religion, whichever religion it is.

I agree with the hon. Members that there has been a lot of exploitation by the Christian missionaries especially in the border areas. But, at the same time, I would like to remind the hon. Members of what others have done in this aspect. They go to those places, stay in the far-flung parts or in jungle tracts of the hilly areas and get their children educated. So the fault is ours; it is not right to blame somebody else. But, at the same time, there are some missionaries who are really sincere, who go and serve the poor people of this country. At the same time, there are others who try to exploit the people, make use of the situation, the backwardness and poverty, and exploit them for their own political and other ends. So, this sort of thing should not happen, and I think in that sense, I support this Bill.

Sir, you allowed so much time for the other hon. Members so I request you to give me also some time. I am saying this because I see you are reaching for the bell. I have great admiration for Dr. Melkote, for his spiritual knowledge from the scientific point of view and not blind belief as is the case with some others. Actually, Hinduism is not an exact religion; it is a creed followed beyond Indus. That is how many religions came and got absorbed in this country.

Mr. Joshi quoted Vivekananda. Even Vivekananda carried an imitation of Christ in his pocket. Krishna cult is followed in America. They are all thirsting for the knowledge about our religion, because ultimately man wants peace of mind and not just go on saying this religion is different from that and so on. The aim of all religions is the attainment of the highest truth. Wen I went to Australia, one Australian friend was so anxious to know about our country, Actually, he reads Gita every day. That is how the outside world is looking to us for knowledge. My grandfather used to do *namaz* five terms a day. He loved Islam. What is wrong in that? We may love Christs for his sacrifice and ahimsa. I request the politicians to keep their hands off religion. Religion should be left to itself. Actually, Annie Besant, who was President of the All India Congress Committee, insisted that the word 'Hindi should be there in the name of the Banaras Hindu University, because if India forgets Hinduism, India dies. It is exact science. Even Russia, after splitting the atom, is flabbergasted. Sir, since you are impatient, I am concluding. A synthesis of all religions should be evolved. With these words, I support the Bill.

श्री डी०एन० तिवारी (गोपालगंज) . सभापति जी, मैं जोशीजी की हुशियारी की ताईद करता हूं। उन्होंने बिल जो ड्राफ्ट किया है उसमें कहीं रेलीजन और धर्म की बात नहीं है। हिन्दू से क्रिश्चियन हो, क्रिश्चियन से हिन्दू हो, क्रिश्चियन से मुसलमान हो, मुसलमान से हिन्दू हो या हिन्दू से मुसलमान हो, कहीं कोई ब्यौरा इसका उन्होंने नहीं दिया और मैं समझता हूं यही उनकी बुद्धिमानी है, चतुरता है कि उन्होंने कहीं यह नाम नहीं लिया कि चूंकि लोग हिन्दू धर्म से दूसरे धर्म में जा रहे हैं इसलिए यह बिल वह लाए हैं। लेकिन जो उनका भाषण हुआ, जिस ढंग को अपने भाषण में उन्होंने जबर किया उससे मालूम होता है कि उनका रियल इन्टेशन क्या है। उनके भाषण से जाहिर हो जाता है कि वह इसको इसीलिए लाए हैं कि हिन्दू से लोग दूसरे धर्मों में जा रहे हैं। पूरे उनके भाषण का यही मतलब है। डा. मेलकोटे साहब ने भी शायद बिल को पढ़ा नहीं। उन्होंने हिन्दू धर्म की व्याख्या की और कहा कि हिन्दू धर्म ऐसा है, हिन्दू धर्म वैसा है। इस बिल को चाहे जितनी होशियारी से ड्राफ्ट किया गया हो लेकिन यह सिम्पल बिल है नहीं। आप देखेंगे कि इसमें मनुष्य की स्वतंत्रता पर आघात है, जो कांस्टीटयूशन के खिलाफ है। मूवर ने कहा है क्लाज 3 में—यदि कोई मनुष्य अपना धर्म परिवर्तन करना चाहता है तो अपने मन से नहीं कर सकता है, उसको किसी हाकिम का सहारा लेना पड़ेगा—क्यों साहारा ले ? यदि आप स्वतंत्रता पसन्द है तो क्यों हाकिम का सहारा लेंगे, जो अपना धर्म परिवर्तन करना चाहता है, करे, उसमें रजिस्ट्रेशन कराने की क्या जरूरत है।

फिर राजनीति आ जाती है, माइनोरिटी और मेजारिटी का सवाल आ जाता है—रजिस्ट्रेशन की बात से हमें कुछ ऐसी गंध आती है कि इसको दूसरे इन्टेन्शन से रखा गया है। कोई भी मनुष्य संसार में इसको पसन्द नहीं करेगा कि किसी का जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जाय, किसी को लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया जाय, जो अबोध लोग है उनका धर्म परिवर्तन कराया जाय। इसीलिए पहली मर्तबा इसको देखने से बिल बड़ा सिम्पुल लगता है, लेकिन इस को स्टडी किया जाय, इसकी गहराई में जाएं, तो उतना सिम्पुल बिल नहीं है।

आज कल जो शादियां हो रही हैं—उनमें बाप किसी दूसरे धर्म को मानता है, मां कोई दूसरा धर्म मानती है, अब बच्चा किस धर्म में जाय, किस धर्म को माने.....

श्री जगन्नाथ राव जोशी . बाप के धर्म को माने।

श्री डी०एन० तिवारी : मां के धर्म को क्यों नहीं माने ?

श्री जगन्नाथ राव जोशी : आप के कानून में ऐसी व्यवस्था है, आप ही लोगों ने कानून बनाया है।

श्री डी० एन० तिवारी : इसमें आपने लिख दिया है कि जब 21 वर्ष का हो जाय तब ही ऐसा हो सकता है। हमारे यहां लड़कियों की शादी 18 वर्ष में हो जाती है, 18 वर्ष में वे बालिग हो जाती हैं, क्या इस कानून से उन को तीन वर्ष तक वेट करना होगा धर्म परिवर्तन के लिये.....

श्री दीनेश भट्टाचार्य (सीरामपुर) : शादी तो हो जायगी।

श्री डी०एन० तिवारी : दूसरे किसी की वजह से होगी ? तब तो बालिग नहीं कही जा सकती है। इतनी कम्पलीकेशन्ज है—हम लोग इसको ऐसे ही पास कर दें या खत्म कर दें—यह ठीक मालूम नहीं होता है।

जिस भाव से जोशीजी इस बिल को यहां लाये हैं—वह साफ है। वे चाहते हैं कि अधिक लोग क्रिश्चियन न हों, मुसलमान न हों—मैं तो यही कहूंगा—हमारे यहां एक कहावत है—फिजीशियन-हील-दाइसेल्फ। कभी आपने अपने घर को देखा है। अगर हिन्दू हैं तो क्यों आप के यहां से इतने लोग चले गये, किस कारण से चले गये ? हिन्दुस्तान में शायद दो-चार सौ मुसलमान आये होंगे, क्यों आज 10 करोड़ हो गये, किस लिये हो गये—आपसे उनको बनाया, हमने उनको बनाया, वे अपने से नहीं बने। धर्म-परिवर्तन जो जबरदस्ती हुआ—सौ-दो-सौ आदमियों का हुआ होगा, लेकिन हमारे आचरण से, हमारे व्यवहार से, हमारे अपने आदमियों को ठीक से न रखने से इतना धर्म परिवर्तन हुआ। यदि पानी खुला पी गया, तो वह मुसलमान बन गया, क्रिश्चियन बन गया। जोशीजी पहले अपने घर को देखें, वह क्या कर रहे हैं, क्यों उन के धर्म की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही है ?

सभापति जी, मैं हिन्दू हूं, हिन्दू परम्परा में विश्वास रखने वाला हूं, भारतीय संस्कृति को मानने वाला हूं, लेकिन इस तरह का बिल ला कर हम उसको नहीं बचा सकते। क्यों लालच में हमारे लोग पड़ते हैं ? इस लिए कि हम ठीक से उनकी सेवा नहीं करते हैं। अगर विधानरीय बाहर से सेवा करने के लिये आये हैं तो उसकी अच्छियां नहीं उड़ायेंगे, हम यह नहीं कहेंगे कि यह गलत काम कर रहा है। जब हम अपने आदमियों को नहीं पूछते थे, तब उन्होंने पूछा, उनका मकसद दूसरा हो सकता है, इस बात को मैं मानता हूं। लेकिन उन्होंने सांसारिक राहत दी, दवा दी, खाना दिया, हम उस वक्त कहां थे, हमारा आर्य समाज कहां था, हमारी हिन्दू संस्कृति के लोग कहां थे, क्यों नहीं आगे आये। ये लोग 7 हजार माइल से आकर यहां काम कर रहे हैं, हमारे धर्म प्रचारक क्या करते थे, क्यों राहत नहीं दे सके ? दोष अपना और मत्थे मढ़े दूसरों के, यह शोभा नहीं देता है। मैं तो यह कहूंगा कि इस बिल को लाने के पहले हमारे जो भाई दबे हुए हैं, जो नीचे गिरे हुए हैं उनकी तरफ देखें, उनकी सहायता करें। उनको ऊपर उठाने की कोशिश करें तभी यह रुक सकता है नहीं तो 21 वर्ष की उम्र के बाद भले ही लालच से धर्म परिवर्तन हो लेकिन आप उसको रोक कैसे सकेंगे ? उसको आप पैसा दें, उसकी अच्छी लड़की से शादी करा दें तो शायद रुके। लेकिन आज होता क्या है। सिनेमा एक्ट्रेस इधर उधर शादी करती है। क्यों ? इसलिए नहीं कि उनको लालच हो गया। वे धर्म भी परिवर्तित कर लेती है। क्यों ऐसा होता है ? हमारे यहां अच्छे खानदानों में हमने देखा कि बहुत से लोग दूसरे धर्मों की लड़कियों से शादी कर लेते हैं और स्त्रियां भी दूसरे धर्म के पुरुषों से शादी कर लेती है। यह लालच से नहीं होता है बल्कि हम उन्हें बचा नहीं पाते। यह भी नहीं कि उस धर्म में उनको विश्वास हो बल्कि एक क्षणिक आवेश में वे लोग बह जाते हैं। इसको आप रोक कैसे सकते हैं ? क्या इस बिल के द्वारा ? बच्चा जब पैदा होता है तब उसका कोई धर्म नहीं होता है बल्कि यह बच्चा बाद में धर्म सीखता है अपने मां-बाप से। हो सकता है कि उसके मां-बाप का जो धर्म है उसको वह पसन्द न करता हो लेकिन उसको वह धर्म सीखना पड़ता है क्योंकि उसका अपना कोई धर्म नहीं होता है। हम पूजा करते हैं या नमाज पढ़ते हैं उसका असर उस पर पड़ता

है लेकिन है तो यह इर्रेलिजस क्योंकि उसका कोई धर्म नहीं है और वह जो धर्म सीखता है उसमें उसको स्वतंत्रता नहीं है कि कौनसा धर्म वह सीखें। इसलिए मैं कहूंगा कि 18 वर्ष तक किसी धर्म की शिक्षा ही नहीं देनी चाहिए। हां, मनुष्यता की शिक्षा देनी चाहिए, आचार व्यवहार की शिक्षा देनी चाहिए और सिटिजनशिप और देश प्रेम की शिक्षा देनी चाहिए। असल में धर्म अगर कोई ऐसी चीज है जो भगवान से सम्बन्ध रखती है, परलोक से सम्बन्ध रखती है तो 18 वर्ष तक किसी धर्म की शिक्षा नहीं होनी चाहिए और मनुष्य को अपना रास्ता अख्तियार करने की छूट होनी चाहिए कि कैसे अपनी आकबत बना सके और कैसे अपना स्वर्ग ले सके तब हम समझेंगे कि यह फ्री स्टेट है और फ्री तरीके से हम चल रहे है वरना 18 साल तक मां-बाप की संस्कृति लादकर आप उसको फ्री कहें तो क्या यह उचित होगा ? इसलिए मैं कहूंगा कि यह बिल बिल्कुल निरर्थक हैं। दूसरी बात है कि यह कानकरेन्ट लिस्ट का सब्जेक्ट है—इस पर स्टेट भी कानून बना सकती है और सेन्टर भी कानून बना सकता है। जैसा कि आपने ही कहा, बहुत सी स्टेट्स ने कानून बनाये है तो उनको ही कानून बनाने दीजिये, हम क्यों इस विषय पर माथा-पच्ची करें। मध्य प्रदेश या दूसरी स्टेट्स ने कानून बनाये हैं तो उनको बनाने दीजिए पार्लमेन्ट क्यों इस भार को अपने ऊपर ले।

एक बात और कहना चाहता हूं। हिन्दू धर्म के सम्बन्ध मे चूंकि मूवर महोदय ने उसको रेफर किया है इसलिए उसका जवाब देना चाहता हूं.....

सभापति महोदय : आप उसको छोड़ दीजिए, आप बहुत अच्छा बोल गए हैं।

श्री डी०एस० तिवारी : यह उन्हीं के अभाव में है इस बिल के खिलाफ मुझे जो कहना था वह कह दिया है। असल में हिन्दू धर्म एक मेला है।... (व्यवधान).....मेले में इधर उधर के लोग आते हैं, जाते हैं और रहते हैं। यहां शैव भी हैं, शाक्य भी हैं, नास्तिक भी हैं और आस्तिक भी हैं। जैसा कि डा० मेलकोटे ने नाम लिया चारवाक का:

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥

तो फिर धर्म कौन है ? हिन्दू धर्म में सभी का समावेश है—बौद्ध लोग भी हिन्दू कहलाते हैं, सिख भी हिन्दू कहलाते हैं लेकिन आप उनकी बात नहीं मानेंगे, उनके रास्ते पर नहीं चलियेगा इसलिए हिन्दू कोई धर्म नहीं है। हिन्दुत्व एक रास्ता है चलने का जिस पर हम चलते हैं। इसमें भिन्न-भिन्न मत वाले पनाह पाते हैं।

*SHRI DHANDAPANI (Dharapuram): Mr. Chairman, Sir, I rise to oppose the Prevention of Conversion Bill, 1971 moved by hon. Member, Shri Jagannath Rao Joshi.

The very first reason that I would like to advance for opposing this Bill is that in our country every citizen has got the constitutional right to profess and practice a religion of his choice and the provisions of this Bill are contrary to the fundamental rights enshrined in our Constitution. This Bill violates violently the constitutional guarantee of free choice of religion to a citizen.

Clause 3 of this Bill reads :

"The religion of every minor Indian citizen shall be one which is followed by his parents and it shall be recorded accordingly."

Clause 4 says :

"No minor shall have the right to change his religion."

These two clause are self-contradictory. It will be a far-fecthed proposition that the parents wanting to convert from one religion to another will tell their wards that they can convert themselves to their new-found faith after attaining majority. This according to me is an outrageous proposition. It will only be a natural concomitant that the children follow the faith professed and practised by

* The original speech was delivered in Tamil.

[Shri Dandhapani]

their parents and you cannot expect them to wait till they become majors.

Religion is intrinsically connected with one's personal life. Religious faith is a matter of one's conscience. As pointed out by the hon. Member, Shri Tiwari, it will be fruitful to all of us if we ponder over the manner in which the religious activities are being carried on in daily life in our country. The hon. Member from Telengana expounded lucidly the philosophical thoughts of Hinduism. I feel that these high-sounding thoughts can only be the pastime of old poeple who in their retirement can dwell at length on the different aspects of Hindu faith. They have not and cannot make meaningful contribution to the daily life of the people in our country.

All of us are aware that the superstructure of Hindu religion has been built on the foundation of castes. Even now the Hindu Harijan cannot enter a temple. For example, I happen to be the Managing Trustee of Dandapaniswami temple at Palani, the annual income o f which is of the tune of Rs. 40 lakhs. Though I am administering the funds, I am not allowed to enter the temple. If I were to become a Christian and chosen as a Trustee, I will be welcomed inside the Church.

At the time when foreign missionaries came to India, the people of our country were wallowing in the dark room of illiteracy. Hindu religion stipulated that hot molten liquid should be poured into the ears of any Sudra wanting to educate himself. At this juncture the foreign missionaries opened the doors of knowledge to these oppressed preople. It will be highly improper to ban or punish conversion from one religion to another. Instead, purposeful reforms are to be brought about in all the religions and the accompanying organisations so that conversion is not attractive. Unfettered opportunity should be given to all the citizens of the country to profess and practise, the religion of their choice, whether it be Christianity, Islam or Hinduism. The livelihood of a person does not depend upon the religion to which he belongs. A Christian does not get less salary for the job he does or for that matter a Hindu does not get high salary. The avocation of an individual is determined by his capabilities and not by the tenets of his religion. This Bill will create a new problem and I am sure that it will not be helping in any way any religion. This cannot be accepted by anyone in this House.

Shri Tiwari pertinently posed the question as to what happens if the wife of Hindu is a Christian. My own wife is a Christian. When I go to a temple my children follow me and when my wife visits the Church, they accompany her. As I pointed out earlier, religion has no role in the social life of a man. It is confined mainly to his private life. Religion can never lay down determinents for a man in his day to day routine. Ours is a country of diverse cultures and differing religious faiths. I believe that tolerance should be the fundamental tenet of a religion, whether it be Christianity, Islam or Hinduism. A religion cannot be codified by a legislative measure.

Shri Joshi is a man of erudition and a statesman of repute. I would request him to withdraw this Bill as I feel that such an ordinary problem should not be an issue for legislation in this House. I would request him to bend all his energies for reforming the Hindu religion and its manifold institutions. It is not an unreasonable fear that the scheduled castes entertain about Hinduism because it is an acknowledged fact that these sections of our socity have always been suppressed for centuries by caste Hindus. We have to take steps for removing this genuine fear from the minds of scheduled castes.

There is a provision in this Bill that any person who seeks to convert a minor by adopting different means shall be deemed to have committed an offence punishable with rigorous imprisonment for 5 years. Only the other day we in the Opposition including Shri Vajpayee staged a walk-out protesting against the preventive detention measure. This Bill which proposes five years imprisonment for a minor crime of attempting to convert is a much more retrograde measure as compared to the preventive detention measure brought out by the ruling Congress. I would once again appeal to Shri Joshi to withdraw this Bill. With these few words, I conclude.

SHRI DINESH CHANDRA GOSWAMI (Gauhati) : Mr. Chairman, while opposing this Bill, I want to make it clear that I am also against conversion of minors by giving any allurement or under pressure. But, unfortunately, the Bill moved by Mr. Joshi, though its title says a Bill to restrict the conversion of religion of minors, travels beyond its scope and the provisions of this Bill are against the Fundamental Rights guaranteed under the Constitution and therefore, this Bill cannot stand the scrutiny of law. It says :

"No minor shall have the right to change his religion". A minor with the provisions of the Act, is one who is below 21 years of age and even if he wants to change his religion out of his own accord, he is preverted from doing so.

Clause 4 of the Bill says :

"If a minor of his own accord or under any influence or allurement changes his parental religion."

Now this provision is precisely against Art. 25 of the Constitution because Art. 25 says :

"Nothing in this article shall affect the operation of any existing law or prevent the State from making any law....."

It is said 'Subject to public order, morality and health and to the other provision of this Part, all persons are equally entlited to freedom of conscience and the right freely to profess, practise and propagate religion."

Therefore, one has the right under Art 25 to 'profess, practise and propagate religion.'

And as such the provisions of this Bill will be violative of Art 25. If it is challenged on the courts of law, it will not stand scrutiny.

Sec. 5 of this Bill again says that even making a suggestion for conversion will be punishable under this Bill. Sir, this Bill have far-reaching consequences. Supposre a person wants to have an inter-caste marriage or inter-community marriage and he suggests to another that he or she may change his or her religion before they get married, that will come under the mischief of this Bill. This also will violate his personal law and, therefore, is violative of the Constitution.

Then, Sec. 6 is extremely objectionable. It says :

"Any major person who wants to change his religion shall have to obtain the permission of the District Magistrate...."

Now, when an authority has been vested with powers to give permission, it implies that the same authotiry has the power to refuse permission. Therefore, under Sec. 6 which gives authority to the District Magistrate to grant permission, the District Magistrate may in his sweet will refuse permission. That will be precisely violative of Art. 25 because I have a right to practise my own religion and nobody can put a hamper on it. Therefore, Sec. 6 is violative of the Constitution.

There is another lacuna in Sec 6. Supposing a person changes his religion without taking permission...

MR. CHAIRMAN : The hon. Member may continue next time.

17.55 hrs.

STATEMENT *RE* IDOL STOLEN FROM HARI RAI TEMPLE, CHAMBA

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : On behalf of my colleague, the Education Minister, I beg to make the following statement :

On 21st June, 1971 the Education Minister made a statement in response to the Calling Attention Notice by Shri Vikram Mahajan